Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 04, October, 2020, pp. 95-97

महिला सशक्तिकरण और सतत् विकास

श्रीमती नितेश*

lkj

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक हर क्षेत्र में नारी के त्याग, बलिदान, शौर्य व ममत्व का वर्णन मिलता है। नारी इस सृष्टी की अदभुत रचना है। जिसने मानव निर्माण से लेकर परिवार, समाज व राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मां के रूप में वे अनन्त काल से ही दुनिया के भावी नागरिको को जन्म देने और पालन–पोषण का काम खुबसूरती के साथ करती आयी है। बहनो, बेटियों और पत्नियों के रूप में उन्होने इस समाज को आगे बढाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। और पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र निर्माण में महती भूमिका निभायी है। वर्तमान में आधुनिक भूमिकाओं में वे शिक्षण, प्रबंधक, राजनेता आदि रही है। महिलाएं हमारे देश की आबादी का आधा हिस्सा हैं। इस आबादी को साथ लिये बीना देश के विकास की कल्पना भी नही की जा सकती। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास में आपसी गहरा सम्बन्ध है। सशक्तिकरण के बीना आर्थिक विकास अधूरा है और आर्थिक विकास के बीना सशक्तिकरण असम्भव है।

iLrkouk

जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाएं पुरूषों के साथ कदम मिलाकर आगे बढ रही है। लैगिंक समानता अपने आप में एक लक्ष्य है, लेकिन यह समानता आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। सभी प्रकार की गतिविधियों में महिलाओं और पुरूषों को समान अवसर मिलने चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि संसाधनों के आवंटन में महिलाओं व पुरूषों के हितो का बराबर ध्यान रखा गया।

यह सर्वविदित है कि महिलाएं पुरूषों के समान सामाजिक,आर्थिक, राजनैतिक, अधिकारों से वंचित रही है। संविधान में महिलाओं को सभी अधिकार पुरूषों के समान प्राप्त है परन्तु भारतीय समाज का पारम्परिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण जिससे महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है, संसद में महिलाओं की भागीदारी कभी 10 प्रतिशत से ज्यादा नही रही। उनके जीवन को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक,कानूनी, राजनीतिक, नियमों के निरूपण में उनकी राय नही ली जाती और उन्हें अधीन रखा जाता है। मानव संसाधन का आधा हिस्सा अगर आर्थिक विकास की मुख्या धारा से दूर रहता है और उसकी उत्पादकता का लाभ अगर देश को नही मिलता है तो यह आर्थिक विकास के लिए अच्छा संकेत नही है। महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को समग्रता से प्राप्त करना है तो महिलाओं को पुरूषों के समान सफल बनाने के लिए उनको विकास की मुख्य धारा में शामिल करना जरूरी है। अगर उन्हें जीवन में सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रो में समान अवसर प्रदान किए जाए तो महिलाओं को सार्वजनिक रूप से सक्रिय जीवन व्यतीत करने की स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। जिससे महिलाएं अपने विचारो को ज्यादा स्पष्ट ढंग से व्यक्त कर सकेगी एवं अपने कार्य क्षेत्र में अधिक उत्पादक बन सकेगी। उनकी इस उत्पादकता का लाभ समाज व राष्ट्र को प्राप्त होगा। मानवीय संसाधनो का बेहतर ढंग से प्रयोग कर एक राष्ट्र सतत विकास के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

* सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, जी.के.गोवाणी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भीनामल, जालोर, राजस्थान।

सशक्तिकरण की अवधारणा (The Concept of Empowerment)

सशक्तिकरण को ''बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया'' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो लोगों को अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण पाने में सहायता करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी स्तरों पर महिलाओं में आत्मविश्वास उत्पन्न कर उन्हें सशक्त बनाती है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है कि महिलाएं अपने जीवन पर अधिक शक्ति और नियंत्रण प्राप्त करें। आसान शब्दों में कहा जाए तो महिला सशक्तिकरण से महिलाऍं शक्तिशाली बनती है। जिससे वह अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में भली प्रकार से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण है। सशक्तिकरण में इतनी शक्ति होती है कि वह राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर समाजिक आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में परिवर्तन अवश्य लाता है। क्योंकि समाज में किसी भी समस्या से वह पुरूषों की तुलना में बेहतर ढंग से निपट सकती है। ''लैंगिक अंतर'' को कम करने और लैंगिक समानता को बनाए रखने से पहले महिलाओं और पुरूषों के बीच खेल का मैदान समान बनाने के लिए महिलाओं को ''सशक्त'' होने की आवश्यकता है।

सतत् विकास की अवधारणा (The Concept of sustainable Empowerment)

सतत् विकास के अनेक तरह से परिभाषित किया गया है, लेकिन ज्यादातर उद्धत परिभाषा हमारे भविष्य से है, जिसे ब्रन्डलैंड रिपोर्ट के रूप में भी जाना जाता हैः–

सतत् विकास को तीन अंतर संबंधित स्तंभो पर के रूपों में माना जाता है – आर्थिक विकास, समाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण। और चौथा स्तंभ – सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण है। इस विचार की दृष्टि से इन क्षेत्रों को अलग–अलग किए बिना अलग–थलग कर दिया जा सकता है। यह एक पूरी श्रखंला के द्वारा ये स्तभ एक दूसरे को सुदृढ़ करते है और सतत् विकास लाते है। यह महत्वपूर्ण है कि सामाजिक विकास के रूप में अकेले महिला सशक्तिकरण और लैगिंक समानता की अवधारणा न लें, लेकिन आर्थिक और सामाजिक सांस्कृतिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के रूप में क्रॉस–कटिंग मुद्दा है। विश्व विकास और पर्यावरण विकास द्वारा सतत् विकास को विकास के रूप में परिभाषित किया गया है।

महिलाओं को सतत् विकास के लिए सशक्त बनाना (Empowering Women for Sustainable Development)

महिला सशक्तिकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है और सतत् विकास सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं को शामिल करता है इस प्रकार यह एक व्यापक अवधारणा है। आज तक लैंगिक मुद्दे सामाजिक मुद्दे थे, पर अब विकास प्रक्रिया में लक्ष्यों के रूप में गरीबी में कमी, शिक्षा और स्वास्थ्य को बढावा व लैंगिक समानता परिलक्षित होते है। लैंगिक समानता न सिर्फ एक बुनयादी मानव अधिकार है, बल्कि एक शांतिपूर्ण और टिकाउ विश्व के लिए आवश्यकता बुनियाद भी है। महिलाओं को मुख्यधारा से बाहर रखने का मतलब दुनिया की आधी आबादी को सम्पन्न समाज और अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण में भागीदारी के अवसर से वंचित रखना है। शिक्षा की समान सुलभता लाभकारी काम और राजनीतिक तथा आर्थिक निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी न सिर्फ महिलाओं के लिए आवश्यक अधिकार है, बल्कि इनसे कुल मिलाकर मानवता लाभन्वित होती है। महिलाओं के सशक्तिकरण में निवेश कर हम न सिर्फ सतत् विकास की दिशा में आगे बढते है बल्कि गरीबी कम करने में भी लाभ होता है। तथा टिकाउ आर्थिक वृद्धि को गति मिलती है।

महिला सशक्तिकरण व सतत् विकास एक दूसरे के पूरक

महिला सशक्तिकरण अपने आप में महिला मानव संसाधन को सशक्त करना है, और सतत विकास भी मानव संसाधन के गुणात्मक विकास पर जोर देता है। सतत विकास के लक्ष्य गरीबी समाप्ति, खाद्य सुरक्षा, बेहतर पोषण और टिकाउ कृषि को प्राप्त किया जा सकता है। महिलाऍं उत्पादक, गृह खाद्य प्रबंधक और उपभोक्ताओं के रूप में खाद्य संबंधी मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उत्पादको के रूप में वे किसानो की भूमिका में एक उच्च अनुपात में योगदान देती है। महिलाएं वन और मत्स्य पालन के माध्यम से खाद्य प्रणालियों में भी योगदान देती है।

सतत् विकास का लक्ष्य लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना, भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजनाएँ ''बेटी बचाओं बेटी पढाओं'', सुकन्या समृद्धि व नारी शक्ति पुरस्कार जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश की जा रही है। साथ ही स्वास्थ्य सुरक्षा और आधुनिक उर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही ''प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना'', ''मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम 2017'' जैसी महत्वपूर्ण योजनाए मदद कर रही है। सभी के लिए – सरकार की ''मनरेगा'', ''प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना'', ''प्रधानमंत्री मुद्रा योजना'' महिला उधमिता मंच के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है। इस तरह से महिला मानव संसाधन को सशक्त किये बीना सतत विकास को प्राप्त नही किया जा सकता। मानव संसाधन का मात्रात्मक व गुणात्मक विकास अपने आप में सतत विकास व समावेशी विकास का परम ध्येय है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को एकीकृत और समग्र करने की आवश्यकता है। लैंगिक मानता को केवल सामाजिक सांस्कृतिक रूप में नहीं माना जाए, बल्कि इसे आर्थिक और पर्यावरणीय क्षेत्रो में विचार करने के लिये स्थायी विकास को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप माना जाये। साथ ही महिलाओं को आर्थिक संसाधनों पर समान अधिकार तथा संपत्ति, वित्तीय सेवाओं, उत्तराधिकार और प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण और स्वामित्व को राष्ट्रीय कानूनो के अनुसार उपलब्ध करवाने पर जोर देना होगा। सभी स्तरों पर महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए ठोस नीतियां लगू करने और उन्हें अपनाने की जरूरत है। तभी महिलाए सशक्त होगी और सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ❖ भारत सरकार के वित मंत्रालय की अधिकारिक वेबसाइट–finmin.nic.in/hindi/index.asp
- ❖ WWW.dw.com/hi/ महिला सशक्तिकरण के दावों से टकराती सच्चाई / ए–18994158
- ❖ महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की अधिकारिक वेबसाइट www.mpwed.in
- ❖ India lok shabha secretariat. Standing committee on social justice and empowerment. Reports. New delhi
- ❖ Lok shabha secretariat India Ministry of social justice and empowerment. Annual report. New delhi the author

♦❐♦